



# IJRASET

International Journal For Research in  
Applied Science and Engineering Technology



# INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

**Volume:** 12    **Issue:** XII    **Month of publication:** December 2024

**DOI:** <https://doi.org/10.22214/ijraset.2024.66088>

[www.ijraset.com](http://www.ijraset.com)

Call:  08813907089

E-mail ID: [ijraset@gmail.com](mailto:ijraset@gmail.com)

# लैंगिक समानता : एक ज्वलन्त प्रश्न

डा पूजा तिवारी

सह प्राध्यापक एवम विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय बिछुआ जिला छिन्दवाडा [म.प्र.]

लैंगिक समानता एक मौलिक मानव अधिकार होने के अलावा, शांतिपूर्ण समाजों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, जिससे पूर्ण मानव क्षमता और सतत विकास हो। लैंगिक समानता अर्थात् एक ऐसा विश्व जहाँ कोई भी व्यक्ति अपनी लैंगिक पहचान के कारण डर में न रहे या हिंसा का सामना न करना पड़े। लैंगिक समानता में समान अधिकार, समान अवसर, सम्मान तथा बिना किसी डर के अपनी पहचान ज़ाहिर करने की छूट आदि शामिल हैं।

लैंगिक समानता पर श्री चतरसिंह मेहता द्वारा प्रकाशित लेख "मानव विकास और महिलाएं" में लिखा है की विश्व में लगभग आधी आबादी महिलाओं की है पर उन्हें पुरुषों के समान अवसर प्राप्त नहीं हैं, यह कटु सत्य है की महिलाओं को पुरुषों से अधिक काम करना पड़ता है किन्तु उनके कार्यों की कोई कीमत ही नहीं आंकी जाती है।

## I. समानता की खोज

महिला द्वारा पुरुष के साथ समानता की खोज एक सार्वभौमिक तथ्य बन चुका है, महिलाएं वर्तमान में इस कठोर पुरुष प्रधान समाज में समानता प्राप्त करना चाहती हैं।

### A. महिला - पुरुष सम्बन्ध

पुरुषों से अलग महिलाओं की पहचान की अभिव्यक्ति वैचारिक दृष्टि से तो हो सकती है किन्तु व्यावहारिक दृष्टि से नहीं।

सामान्य रूप से एक महिला की पहचान स्वयं और अन्य लोगों के द्वारा एक पुरुष के साथ एक पुत्री, एक पत्नी, एक माँ के रूप में ही की जाती है।

### B. व्यक्ति के रूप में महिलाओं की पहचान

परिवार में महिला की पहचान उसकी बुमिका से परिभाषित की जाती है, महिलाओं की पहचान के कई पक्ष हैं जो उसके परिवार की जातीय एवम वर्गीय पृष्ठ भूमि पर निर्भर हैं। जब कभी महिला ने स्वयं को एक "व्यक्ति" के रूप में पहचान प्रकट करना

चाहा तो उसको अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है।

### C. महिलाओं को सर्वत्र असमान अवसर

समाज में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अवसर प्राप्त नहीं हैं, लगभग सभी समाजों में पुरुष जीवन के हर पहलु में अपना निर्णय सर्वोपरी रखता है दुर्भाग्य यह है की दुनिया के सभी देशों में लैंगिक समानता पर कोई विशेष सुधार कार्य नहीं हो पा रहा है, विश्व के 130 देशों में स्वीडन, फ़िनलैंड, नार्वे एवम डेनमार्क लिंग समानता और महिला अधिकारों में सबसे ऊँचे दर्जे पर हैं। विश्व लैंगिक अंतर सूचकांक 2024 में भारत 146 देशों में 129 वें स्थान पर है जबकि 2022 में भारत 193 देशों में 108 वें स्थान और 2023 में भारत 146 देशों में 127 वें स्थान पर था, महिलाओं की दृष्टि से विकास सूचकांक के जो मानक हैं, उसमें भारत की स्थिति अत्यंत शोचनीय है। राष्ट्रीय आय का समानता से नगण्य संबंध - आय लैंगिक समानता के लिए महत्वपूर्ण घटक नहीं है, विश्व के कई गरीब देशों ने महिला साक्षरता डर में वृद्धि करने में सफलता पाई है।

### D. प्रयत्न अधिक, सफलता कम

यद्यपि हर देश ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए अपने अपने तरीके से प्रयास किये हैं, और कर रहे हैं किन्तु अभी भी असमानता विद्यमान दिखाई देती है।

### E. महिलाओं की आय की गिनती ही नहीं

महिलाओं के आय बहुत ही कम आंकी जाती है, महिलाएँ हमेशा से घरेलू कार्य ज्यादा करती हैं, बच्चों का पालन-पोषण, कुकिंग करना, कपड़े धोना, झाड़ू-पोछा करना अन्य कार्य करना जिसका मूल्य ही नहीं आँका जाता है, यदि महिलाओं के कार्यों की आय की गिनती सही तरीके से की जाये तो यह पुरुषों के बराबर या अधिक ही होगी।

#### F. कानूनी भेदभाव एवम अत्याचार

महिलाओं के प्रति हिंसा एवम अत्याचार आदि असामनता का मुख्य कारण है ,महिलाओं को मानसिक एवम शारीरिक हिंसा का सामना जन्म से लेकर मृत्यु तक करना पड़ता है ,कन्या भ्रूण हत्या ,योन हिंसा ,रेप ,वैश्यावृत्ति ,हत्या ,आत्महत्या ,तलाक ,शारिरिक शोषण आदि महिलाओं के प्रति होने वाले अपराधों की फेहरिस्त बहुत लम्बी है।एशिया में लगभग 10 लाख बालिकाओं को वेश्यावृत्ति में धकेल दिया जाता है ।

### II. मानव विकास रिपोर्ट के अनुसार महिलाओं की स्थिति सुधारने हेतु प्रस्ताव

- 1) कानूनी समानता के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अगले दस सालों तक पूरे प्रयास किये जाएँ ।
- 2) महिलाओं की आर्थिक एवम संस्थागत सहायता में बढ़ोतरी की जाये ।
- 3) सार्वजनिक शिक्षा ,स्वास्थ्य ,प्रजनन ,महिलाओं हेतु ऋण सुविधा आदि में वृद्धि की जाये ताकि महिला समानता बढ़ सके ।
- 4) विकासशील देशों को मानव विकास कार्यक्रम के लिए अपने बजट की 20 प्रतिशत राशि मानव संसाधन विकास जैसे स्वास्थ्य ,शिक्षा ,जल ,पोषण आहार ,परिवार कल्याण कार्यक्रमों के लिए चिन्हित कर देना चाहिए ।
- 5) गरीब लोगों के लिए स्व रोजगार और ऋण सुविधा मिलना चाहिए ।

भारत में उदारीकरण की नीति के बाद सामाजिक क्षेत्रों में व्यय की राशि में आशातीत बढ़ोतरी हुई है ।

नयी विश्व – व्यवस्था में महिला पुरुषों के समान अवसरों में उन्नति हो सकती है क्योंकि जब तक विश्व में महिलाओं की आबादी इस त्रासदी से मुक्त हो कर पुरुषों के समान अवसर युक्त जीवनयापन नहीं कर सकेगी विश्व विकास का सपना नितांत अधूरा ही रहेगा ,अपनी योग्यता एवम क्षमता के अनुसार हर क्षेत्र में महिलाओं को जब समान अवसर उपलब्ध होंगे तभी सही एवम श्रेष्ठ विकास होगा । इस सन्दर्भ मर कई समाज सुधार आंदोलन एवम समाज सुधारक दृष्टिगत होते हैं जैसे रजा राम मोहन राय ने 1828 में ब्रम्ह समाज की स्थापना की थी । ईश्वरचन्द्र विद्या सागर ,महादेव गोविन्द रानाडे ,स्वामी विवेकानंद ,स्वामी दयानंद सरस्वती ,सर सैय्यद अहमद खान ,बदरुदीन तय्यब जी .सय्यद इमाम ,एनिबीसेंट आदि ने महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने ,कुर्रतियों को मिटाने एवम महिलाओं के विकास एवम प्रगति हेतु अथक प्रयास किये हैं ।

इस प्रकार से सम्पूर्ण विश्व में लैंगिक समानता को पाना सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा है यद्यपि वर्तमान में विश्व में तथा खास तौर पर भारत देश में पिछले कई वर्षों में महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने हेतु काफी प्रयास हुए हैं ,किन्तु अभी भी महिलाओं को समानता देने के लिए बहुत कुछ करना शेष है इसलिए विश्व में सतत विकास के लक्ष्यों में लैंगिक समानता को प्रथम पांच महत्वपूर्ण लक्ष्यों में स्थान दिया गया है क्योंकि लैंगिक समानता सामाजिक ,आर्थिक उन्नति हेतु नितांत आवश्यक एवम अनिवार्य है और कोई भी समाज महिलाओं के सामाजिक योगदान को नज़रंदाज़ करके कभी भी प्रगति नहीं कर सकता है क्योंकि लैंगिक समानता ही एक मजबूत समाज की नींव है ।

### संदर्भ

- [1] लवानिया ,डा.एम.एम.-भारतीय महिलाओं का समाजशास्त्र ,रिसर्च पब्लिकेशन्स ,जयपुर
- [2] सिंह ,डा. सिंह निशांत – मानवाधिकार एवम महिलाएं ,राधा पब्लिकेशन्स ,दिल्ली
- [3] बघेल ,डा . डी.एस.- समाजशास्त्रीय निबंध ,कैलाश पुस्तक सदन ,भोपाल
- [4] शर्मा राम ,मिश्रा एम. के .-महिला और मानवाधिकार ,अर्जुन पब्लिशिंग हॉउस ,न्यू दिल्ली
- [5] खत्री ,हरीश कुमार - मानवाधिकार ,कैलाश पुस्तक सदन भोपाल





10.22214/IJRASET



45.98



IMPACT FACTOR:  
7.129



IMPACT FACTOR:  
7.429



# INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089  (24\*7 Support on Whatsapp)